CLASS : 12th (Sr. Secondary) **2073/2023**

Series : SS-M/2017

Total No. of Printed Pages : **24**

SET : A, B, C & D

MARKING INSTRUCTIONS AND MODEL ANSWERS

MUSIC HINDUSTANI (Vocal)

ACADEMIC/OPEN

(Only for Fresh Candidates)

उप-परीक्षक मूल्यांकन निर्देशों का ध्यानपूर्वक अवलोकन करके उत्तर-पुस्तिकाओं का मूल्यांकन करें। यदि परीक्षार्थी ने प्रश्न पूर्ण व सही हल किया है तो उसके पूर्ण अंक दें।

General Instructions :

(i) *Examiners are advised to go through the general as well as specific instructions before taking up evaluation of the answer-books.*

(ii) *Instructions given in the marking scheme are to be followed strictly so that there may be uniformity in evaluation.*

(iii) *Mistakes in the answers are to be underlined or encircled.*

(iv) *Examiners need not hesitate in awarding full marks to the examinee if the answer/s is/are absolutely correct.*

(v) *Examiners are requested to ensure that every answer is seriously and honestly gone through before it is awarded mark/s. It will ensure the authenticity as their evaluation and enhance the reputation of the Institution.*

(vi) A question having parts is to be evaluated and awarded partwise.

(vii) If an examinee writes an acceptable answer which is not given in the marking scheme, he or she may be awarded marks only after consultation with the head-examiner.

(viii) If an examinee attempts an extra question, that answer deserving higher award should be retained and the other scored out.

(ix) Word limit wherever prescribed, if violated upto 10%. On both sides, may be ignored. If the violation exceeds 10%, 1 mark may be deducted.

(x) Head-examiners will approve the standard of marking of the examiners under them only after ensuring the non-violation of the instructions given in the marking scheme.

(xi) Head-examiners and examiners are once again requested and advised to ensure the authenticity of their evaluation by going through the answers seriously, sincerely and honestly. The advice, if not headed to, will bring a bad name to them and the Institution.

महत्त्वपूर्ण निर्देश :

(i) अंक-योजना का उद्देश्य मूल्यांकन को अधिकाधिक वस्तुनिष्ठ बनाना है। अंक-योजना में दिए गए उत्तर-बिन्दु अंतिम नहीं हैं। ये सुझावात्मक एवं सांकेतिक हैं। यदि परीक्षार्थी ने इनसे भिन्न, किन्तु उपयुक्त उत्तर दिए हैं, तो उसे उपयुक्त अंक दिए जाएँ।

(ii) शुद्ध, सार्थक एवं सटीक उत्तरों को यथायोग्य अधिमान दिए जाएँ।

(iii) परीक्षार्थी द्वारा अपेक्षा के अनुरूप सही उत्तर लिखने पर उसे पूर्णांक दिए जाएँ।

(iv) वर्तनीगत अशुद्धियों एवं विषयांतर की स्थिति में अधिक अंक देकर प्रोत्साहित न करें।

(v) भाषा-क्षमता एवं अभिव्यक्ति-कौशल पर ध्यान दिया जाए।

(vi) मुख्य-परीक्षकों/उप-परीक्षकों को उत्तर-पुस्तिकाओं का मूल्यांकन करने के लिए केवल Marking Instructions/ Guidelines दी जा रही हैं, यदि मूल्यांकन निर्देश में किसी प्रकार की त्रुटि हो, प्रश्न का उत्तर स्पष्ट न हो, मूल्यांकन निर्देश में दिए गए उत्तर से अलग कोई और भी उत्तर सही हो तो परीक्षक, मुख्य-परीक्षक से विचार-विमर्श करके उस प्रश्न का मूल्यांकन अपने विवेक अनुसार करें।

SET – A

नोट : सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. प्रश्न नं० **1** का पहला प्रश्न **300-350** शब्दों तक कम से कम होना चाहिए। इस प्रश्न में पं० कृष्णराव शंकर पं० की पूरी जीवनी व संगीत के क्षेत्र में उनके कार्यों का योगदान, इस विषय में उत्तर सारगर्भित होने पर पूरे $\mathbf{2\frac{1}{2}}$ अंक दिए जाए। $2\frac{1}{2}$

अथवा

प्रश्न नं० **1** के दूसरे प्रश्न में राग भीमपलासी के छोटे ख्याल की स्वरलिपि संक्षिप्त परिचय एवं **2** तानें लिखनी होगी।

परिचय : यह राग काफी थाट से उत्पन्न है।

जाति-औडव-सम्पूर्ण, वादी-म, संवादी सा, आरोह में रे, ध स्वर वर्जित तथा गायन समय दिन का दूसरा प्रहर है।

2. इस प्रश्न में (अथवा) है अतः दोनों भागों में (प्रति प्रश्न) उत्तर **300** से **350** शब्दों तक होने चाहिए। सही और सार्थक उत्तर होने पर पूरे $\mathbf{2\frac{1}{2}}$ अंक दिए जाए। $2\frac{1}{2}$

3., 4., 5. प्रश्न नं० **3** में परीक्षार्थी को पं० भातखण्डे जी के द्वारा संगीत के क्षेत्र में विभिन्न कार्यों का विवरण देना होगा जिसमें उनके संगीत कार्यक्रम, भ्रमण, लिखी गई पुस्तकें दश थाट एवं नई स्वरलिपि निर्माण सभी का उल्लेख होना चाहिए। 2

प्रश्न नं० 4 में राग देश को पूर्ण परिचय के साथ लिखना होगा और प्रश्न नं० 5 में धमार ताल के विषय में विस्तार ठाह, दुगुन संग देना होगा। सही उत्तर पर प्रत्येक प्रश्न को **2** अंक दिए जाए। 2 + 2

6. संगीत के स्वरों को गले में उतारने के लिए जिन नियमित स्वर समुदायों का अभ्यास किया जाता है उन्हें अलंकार कहा जाता है। 1

7. स्वर साधना के लिए संगीत में इसकी आवश्यकता है। यह राग देश है।

पकड़ : ध म ग रे, ग नि़ सा 1

8. प्रातःकाल में गाये जाने वाले राग रे ध कोमल स्वर वाले राग होते है। मध्यम शुद्ध लगता है उदाहरण के लिए राग भैरव। 1

9. संगीत पारिजात का रचना काल लगभग 1650 ई० में माना जाता है। इसके रचयिता पं० अहोबल थे। 1

10. मध्यम स्वर अध्वदर्शक स्वर कहलाता है। 1

11. लय का अर्थ गायन या वादन क्रिया की नियमित गति से होता है तथा ताल का अर्थ गीत के शब्दों के अनुसार विभिन्न मात्राओं में उसे बाँधना है। 1

12. मूर्च्छनाएँ ग्राम पर आधारित है। 1

13. सधे हुए स्वरों को गति प्रदान करके राग के विस्तार करने की क्रिया, तान कहलाती है।

शुद्ध तान, कूट तान, सपाट तान, मिश्र तान, पलट तान, बोल तान आदि। कोई तीन तानों के नाम सही हैं तो **1** अंक दें। 1

14. संगीत रत्नाकर में : ग्राम राग, उपराग, शुद्ध राग, भाषा, विभाषा, अन्तर्भाषा, तथा रागांग, उपांग, भाषांग और क्रियांग दस राग वर्गीकरण का विवरण है। 1

15. (i) सा ग ग, रे म म, ग प प, म ध ध, प नि नि, ध सो सो
सां ध ध, नि प प, ध म म, प ग ग, म रे रे, ग सा सा।

(ii) सा रे सा, रे ग रे, ग म ग, म प म, प ध प, ध नि ध
नि सां नि, सां रें सां,
सां रें सां, नि सां नि, ध नि ध, प ध प, म प म, ग म ग,
रे ग रे, सा रे सा। 1

16. बिलावल, कल्याण, काफी, खमाज, भैरव, भैरवी, तोड़ी, पूर्वी, आसावरी, मारवा। 1

17. थाट काफी 1

18. प्रातः 4 - 7 बजे के बीच और सायं 4 - 7 के बीच गाये जाने वाले राग संधि प्रकाश राग कहलाते हैं अर्थात दोनों बेला मिलने का समय संधि प्रकाश कहलाता है और उस समय में जिन रागों का गायन वादन निर्धारित होता है वह संधि प्रकाश राग कहलाते हैं। 1

19. तीव्र मध्यम 1

20. बिलम्बित - बहुत धीरे

मध्य - बीच की लय (न जल्दी, न धीरे)

द्रुत - तेज गति 1

21. पं० भातखण्डे ने क्रमिक पुस्तक मालिका 6 भागों में लिखी है। 1

22. अमल ज्योति घोष गुरू का नाम (दूसरा नाम) (अलाउद्दीन खां) 1

23. एक कुत्ते को 1

24. रीवां के राजा रामचन्द्र के दरबार में। 1

SET – B

नोट : ***सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।***

1. उस्ताद फैयाज़ खाँ का पूरा जीवन परिचय **300-350** शब्दों में कम से कम होना चाहिए। $2\frac{1}{2}$

अथवा

राग-भैरव = थाट :- भैरव, जाति सम्पूर्ण-सम्पूर्ण, गायन समय – प्रातःकाल, स्वर रे ध कोमल शेष शुद्ध, वादी - ध, संवादी रे समप्रकृतिक राग - कालिगंणा राग परिचय उपरांत सही स्वरलिपि, आरोहावरोह, पकड़ सहित लिखी हो तो $\mathbf{2\frac{1}{2}}$ अंक दें।

2. "संगीत रत्नाकर" ग्रंथ पं० शारंगदेव ने लिखा। इस ग्रंथ में मध्यकालीन संगीत के विषय में इनकी महत्त्वपूर्ण जानकारियाँ मिली हैं जिनकों संगीत के नियमों के लिए आधार माना जा सकता है और इसीलिए इस ग्रंथ को मील का पत्थर माना गया है।

रत्नाकर ग्रंथ की पूरी जानकारी लगभग **300** शब्दों तक सही लिखी हो तो $\mathbf{2\frac{1}{2}}$ अंक दें। $2\frac{1}{2}$

अथवा

इस प्रश्न के उत्तर में मध्यकाल के इतिहास के मुख्य संदर्भ **300-350** शब्दों में परीक्षार्थी व्यक्त करें। बौद्ध काल से मुगल काल तक का समय मध्यकाल में आता है।

3. इसमें राग देश का थाट, वादी-संवादी, गायन समय, जाति, आरोहावरोह, पकड़ की सम्पूर्ण जानकारी होनी चाहिए। 2

4. प्रत्येक राग के लिए उसकी प्रकृति के अनुकूल विद्वानों ने गाने बजाने का समय निर्धारित किया है। समय को पूर्वांग और उत्तरांग दो भागों में विभाजित किया गया है। दिन के 12 बजे से रात्रि के 12 बजे तक पूर्वांग तथा रात्रि के 12 बजे से दिन के 12 बजे तक उत्तरांग माना जाता है। समय और स्वर की दृष्टि से राग के तीन भाग :- सन्धि प्रकाश राग अर्थात रे ध कोमल वाले राग, रे ध शुद्ध वाले राग तथा ग नि कोमल वाले राग हैं। शुद्ध स्वरों के साथ तीव्र मध्यम का प्रयोग सांयकालीन रागों की पहचान है। जैसे राग केदार, यमन कल्याण आदि। 2

5. प्राचीन कालीन राग वर्गीकरण :- जातिराग, ग्राम राग, दशाविध राग वर्गीकरण। मध्यकाल में शुद्ध, छायालग, संकीर्ण राग वर्गीकरण, मेल राग वर्गीकरण तथा राग-रागिनी वर्गीकरण।

आधुनिक समय में : रागांग तथा थाट राग वर्गीकरण। अतः संगीत इतिहास में कुल 8 वर्गीकरण प्रचार में आए। 2

6. पं० अहोबल ने। 1

7. झपताल । 2-3 के क्रम से चार विभाग।

पहली पर सम, तीसरी तथा आठवीं मात्रा पर ताली व छटी पर खाली।

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
धी	ना	धी	धी	ना	ती	ना	धी	धी	ना
धीना	धीधी	नाती	नाधी	धीना	धीना	धीधी	नाती	नाधी	धीना
x		2			0		3		1

8. राग बिहाग, सही आरोहावरोह, पकड़ भी लिखी है तो 1 अंक दें। 1

9. गायन में एक विशेष प्रक्रिया द्वारा स्वरों में आंदोलन उत्पन्न करने की कुशलता गमक कहलाती है। 1

10. गायन-वादन में निश्चित बंधी हुई गति लय कहलाती है। संगीत की एक आनन्ददायक अनुभूति के लिए लय महत्त्वपूर्ण है। 1

11. गीत में बोल के अनुसार वजन रखने के लिए, उसे प्रभावशाली बनाने के लिए तथा सुन्दर रूप देने के लिए विभिन्न तालों की आवश्यकता है। 1

12. उदात, अनुदात, स्वरित 1

13. षड्ज, मध्यम, गन्धार ग्राम 1

14. क्रमिक पुस्तक मालिका (छः भाग), हिन्दुस्तानी संगीत पद्धति (चार भाग), लक्ष्य संगीत, अभिनव राग मंजरी। 1

15. रात्री का दूसरा प्रहर। इसकी बन्दिशों में अधिकतर वर्षा ऋतु का विवरण होता है। 1

16. कोई भी अलंकार जो ताल दादरा में बंधे हुए हों जैसे : स ग प रे, म, ध एवं स म म रे प प ग ध ध, आदि। 1

17. वर्ण के चार प्रकार हैं। स्थायी, आरोही, अवरोही, संचारी। स्थायी, आरोही, अवरोही (तीनों वर्णों के मिश्रण से संचारी वर्ण की रचना होती है।) 1

18. तानपूरा, इसका नामकरण, बनावट, अंग, छेड़ने का ढंग तथा मिलाने की विधि संक्षिप्त रूप में लिखी हो तो **1** अंक दें। 1

19. लय गायन-वादन में एक गति है जब कि ताल भिन्न-भिन्न तरीकों से लय को स्वरूप प्रदान करती है। 1

20. किसी एक निर्धारित समय में ताल का एक आवर्तन पूरा होना एकगुन तथा उसी समय में दो आवर्तन पूरे होने की क्रिया दुगुन कहलाती है। 1

21. बिलावल, कल्याण, काफी, खमाज, आसावरी, भैरव, भैरवी, पूर्वी, मारवा, तोड़ी। 1

22. बिलावल। 1

23. स्वरलिपि के माध्यम से संगीत सीखना व सिखाना आसान हो गया है। 1

24. काफी 1

SET – C

1. प्रश्न एक के पहले प्रश्न में राग बिहाग में द्रुत ख्याल की स्वरलिपि राग के थाट, वादी, संवादी, गायन समय, जाति आदि के साथ लिखने पर $\mathbf{2\frac{1}{2}}$ अंक दिए जाए। $2\frac{1}{2}$

अथवा

प्रश्न एक में पं० भातखण्डे जी द्वारा संगीत के क्षेत्र में इसके विकास और विस्तार के लिए उनके कार्यक्रम, यात्राएँ, स्वरलिपि सभाएँ, पुस्तक लेखन, स्कूल कॉलेजों की स्थापना, थाट इन सबके विषय में लिखना होगा। सारगर्भित होने पर $\mathbf{2\frac{1}{2}}$ अंक दिए जाएँ।

2. "संगीत रत्नाकर" ग्रंथ से हमें मध्यकालीन संगीत के विषय में क्या-क्या जानकारियाँ मिलती है और वह आधुनिक संगीत के लिए किस तरह लाभप्रद है जिससे इस ग्रंथ को आधुनिक समय में भी महत्त्वपूर्ण माना जाता है। सटीक और सार्थक होने पर $\mathbf{2\frac{1}{2}}$ अंक दिए जाएँ। 2½

अथवा

दूसरे प्रश्न में गुलाम अली खाँ का पूर्ण जीवन परिचय लिखने पर $\mathbf{2\frac{1}{2}}$ अंक दिए जाएँ।

3. 7 मात्रा, 3 विभाग, पहले में तीन तथा दूसरे व तीसरे विभाग में 2-2 मात्राएँ। पहली पर खाली तथा चौथी व छटी मात्रा पर ताली होती है।

1	2	3	4	5	6	7	
ती	ती	ना	धी	ना	धी	ना	
तीती	नाधी	नाधी	नाती	तीना	धीना	धीना	2
0			2		3		

4. पूर्वांग और उत्तरांग दो विभागों में समय को बाँटा गया है। दिन के 12 बजे से लेकर रात्रि के 12 बजे तक पूर्वांग तथा रात्रि के 12 बजे से दिन के 12 बजे तक उत्तरांग माना गया है। रागों को भी तीन वर्गों में बाँटा गया है। रे, ध कोमल वाले राग, रे ध शुद्ध स्वरों वाले राग तथा ग नि कोमल स्वरों वाले राग। इन स्वरों के

साथ यदि मध्यम शुद्ध होता है तो दिन का समय यदि मध्यम तीव्र होता है तो रात्रिकालीन राग होते है। प्रातःकालीन राग रे, ध कोमल वाले राग शुद्ध मध्यम प्रधान वाले होते हैं। 2

5. राग भीमपलासी का परिचय सही होने पर 2 अंक दें। 2

6. स्वरों को विभिन्न तरीकों से गाने-बजाने की प्रक्रिया वर्ण कहलाती है। यह चार प्रकार का होता है : स्थायी, आरोही, अवरोही, संचारी। 1

7. ताल, संगीत में लय को भिन्न भिन्न मात्राओं में एक स्वरूप देता है और लय, ताल के विभिन्न स्वरूपों से मिलकर संगीत को प्रभावशाली और चमत्कारी बनाता है। 1

8. गाने के लिए गले को तैयार करने के लिए अर्थात स्वरों को साधने के लिए अलंकार आवश्यक हैं। 1

9. राग केदार

आरोह : सा म, म प, मं प ध प, नि ध सा

अवरोह : सां नि ध प, मं प ध प, म रे सा

पकड़ : सा म, म प, मं प ध प, म रे सा 1

10. सधे हुए कंठ से विशेष ढंग से स्वरों को हिलाने की क्रिया गमक तथा गायन में विशेष प्रकार से झटके की प्रक्रिया खटका कहलाता है। 1

11. सात स्वरों के क्रमिक व्यवस्थित समूह को ग्राम कहते हैं। ग्राम के प्रत्येक स्वर को आधार स्वर मानकर विभिन्न स्वरावलियों को प्राप्त करने की प्रक्रिया मूर्च्छना कहलाती है। 1

12. कहरवा, दादरा 1

13. बांसुरी के लिए 1

14. पटियाला घराना 1

15. पं० शारंगदेव 1

16. थाट-खमाज, दोनों निषाद, आरोह में ग और घ स्वर वर्जित, वादी - रे, संवादी - प

गायन समय : रात्रि का दूसरा प्रहर

आरोह : सा रे म प नि सां

अवरोह : सां नि ध प म ग रे सा

पकड़ : ध म ग रे, ग नि़ सा 1

17. मध्यकाल में अकबर का समय काल स्वर्णयुग माना जाता है क्योंकि उस समय में बहुत से संगीतकार हुए और नये अविष्कारों के साथ लेखन कार्य भी हुआ। 1

18. भैरव, भैरवी, आसावरी, तोड़ी, पूर्वी, काफी, खमाज, कल्याण, बिलावल, मारवा। 1

19. ताल धमार, इसकी एकगुण भी लिखें। 1

20. संगीत में सुन्दरता, दक्षता और चमत्कार करने के लिए तान महत्त्वपूर्ण है। 1

21. राग केदार :

आरोह : सा म, म प, म॑ प ध प, नि ध सां।

अवरोह : सां नि ध प, म॑ प ध प, म रे सा।

पकड़ : सा म, म प, म॑ प ध प, म रे सा। 1

22. 4 3 2 4 4 3 2 के क्रम में सात स्वरों की स्थापना की गई है। 1

23. मध्यम को 1

24. प्रातःकालीन - भैरव

मध्यकालीन - भीमपलासी

रात्रिकालीन : केदार

वर्षा ऋतु में = देस 1

SET – D

1. संगीत पारिजात के लेखक पं० अहोबल हैं। इस ग्रंथ में जिस संगीत पद्धति की विवेचना मिलती है वह उत्तरी भारतीय संगीत से मिलती है। रागों का इस ग्रंथ में पूर्ण विवरण मिलता है। 122 रागों का वर्णन इस ग्रंथ में है तथा 29 स्वरों की मान्यता है। उत्तरी भारतीय संगीत को आगे बढ़ने के लिए इस ग्रंथ का भरपूर सहारा मिलता है इसलिए यह महत्त्वपूर्ण है। $2\frac{1}{2}$

अथवा

1900 ई० के प्रारम्भ का समय ही आधुनिक समय माना जाता है। इस ई० से वर्तमान समय तक का इतिहास संक्षिप्त में परीक्षार्थी द्वारा लिखने पर और उत्तर सारगर्भित होने पर $\mathbf{2\frac{1}{2}}$ अंक दिए जाएँ।

2. राग बिहाग = थाट बिलावल, दोनों मध्यम, आरोह में रे, ध स्वर वर्जित, जाति औडव-सम्पूर्ण, वादी-गंधार, संवादी-निषाद तथा गायन समय रात्रि का दूसरा प्रहर है।

आरोह : सा ग म प नि सां।

अवरोह : सां नि ध प म ग रे सा।

पकड़ : नि सा ग म प, प म ग मं ग रे सा।

स्वर लिपि सही होने पर **$2\frac{1}{2}$** अंक दिए जाएँ। $2\frac{1}{2}$

अथवा

श्री पन्नालाल घोष सुप्रसिद्ध बांसुरी वादक रहे हैं। जीवन-परिचय की सार्थकता को ध्यान में रखकर सन्तुष्ट होने पर **$2\frac{1}{2}$** अंक दिए जाएँ।

3. भारतीय रागों की संख्या बहुत है और इन रागों के स्वरूप को ध्यान में रखकर इन्हें भिन्न-भिन्न वर्गों में रखा जाता है और वह वर्गीकरण उस राग की पहचान बन जाती है। उसे राग वर्गीकरण कहा जाता है।

प्राचीन काल में जाति राग ग्राम राग तथा दश विद्यराग वर्गीकरण प्रचार में था। मध्यकाल में शुद्ध, छायालग, संकीर्ण वर्गीकरण, मेल वर्गीकरण एवं रागांग वर्गीकरण प्रचलित है। आधुनिक समय में थाट राग वर्गीकरण प्रसिद्ध है। 2

4. राग भीमपलासी का थाट = काफी, वर्जित स्वर, आरोह में रे ध, जाति औडव-सम्पूर्ण, कोमल स्वर ग़ नि़ ,

वादी मध्यम, संवादी षडज, गायन समय-दिन का तीसरा प्रहर

आरोह : नि़ सा ग़ म प नि़ सां।

अवरोह : सां नि़ ध प म ग़ रे स,

पकड़ : नि़ सा ग म प, म प, ग़ म ग़ रे सा। 2

5. रूपक 7 मात्राओं की ताल है जो सुगम संगीत में अधिक काम आती है।

	1	2	3	4	5	6	7	
एकगुन	ती	ती	ना	धी	ना	धी	ना	
दुगुन	तीती	नाधी	नाधी	नाती	तीना	धीना	धीना	
	0		2	3				2

6. सात स्वरों के क्रमिक समूह को ग्राम करते हैं और ग्राम के प्रत्येक स्वर का आधार स्वर मानकर उन्हीं स्वरों से विभिन्न रूप प्राप्त करना मूर्च्छना कहलाती है। 1

7. यह राग देश है। 1

8. ताल धमार। 1

9. स्वरों के चढ़ते क्रम को आरोही तथा उतरते क्रम को अवरोही वर्ण कहते हैं। जैसे-सा रे ग म प ध नि सां = आरोही वर्ण

सां नि ध प म ग रे सा = अवरोही वर्ण 1

10. किराना घराने से 1

11. 4 3 2 4 4 3 2 अर्थात चौथी पर सा, सातवीं पर के, नवीं पर ग, तेरहवीं पर म, सतरहवीं पर प, बीसवीं पर ध तथा बाईसवीं पर नि। 1

12. कोमल रे ध वाले राग, शुद्ध मध्यम के साथ। 1

13. यदि परीक्षार्थी किन्हीं पाँच प्रकार की गमक के नाम लिखता है तो **1** अंक दीजिए। 1

14. तान की परिभाषा सही होने पर **1** अंक दीजिए। 1

15. अन्तर स्पष्ट होने पर परीक्षार्थी को **1** अंक दीजिए। 1

16. 1210 से 1247 के बीच का समय अर्थात 13वीं सदी। 1

17. 10 थाटों के नाम सही होने पर **1** अंक दीजिए। 1

18. राग देश का आरोह : सा रे म प नि सां

अवरोह : सां नि ध प म ग रे सा

पकड़ : सां नि ध प, ध म ग रे, ग नि़ सा 1

19. आगरा घराना 1

20. प्रबन्ध गायन 1

21. काफी थाट 1

22. किसी भी राग की विशेष स्वर संगीत उस राग की पहचान होती है। यही पहचान उस राग की पकड़ होती है। पकड़ के बिना राग का स्वरूप नहीं बन सकता इसलिए यह बहुत आवश्यक है। 1

23. छः भाग 1

24. ताल झपताल

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
धी	ना	धी	धी	ना	ती	ना	धी	धी	ना
X		2			0		3		1